RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
मार्च
18
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

अमेरिकी द्वारा यमन में हूती-नियंत्रित क्षेत्रों पर हवाई हमले / US airstrikes on Houthi-controlled areas in Yemen

संदर्भ:

अमेरिकी राष्ट्रपति **डोनाल्ड ट्रंप** के आदेश पर **यमन में हौती विद्रोहियों के कब्जे वाले क्षेत्रों** पर हवाई हमले किए गए, जिसमें **31 लोगों की मौत** हुई, जिनमें आम नागरिक भी शामिल हैं।

हमले का मुख्य कारण:

अमेरिका ने हूती विद्रोहियों पर हवाई हमले इसलिए किए क्योंकि हूती विद्रोहियों ने लाल सागर और अदन की खाड़ी में अमेरिकी नौसेना के जहाजों और वाणिज्यिक जहाजों पर हमले किए थे।

मुख्य कारण:

1. **अमेरिकी जहाजों पर हमले:** हूती विद्रोहियों ने लाल सागर में अमेरिकी युद्धपोतों पर 18 बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों से हमले किए।
2. **वाणिज्यिक जहाजों पर हमले:** नवंबर 2023 से, हूतियों ने लाल सागर और अदन की खाड़ी में दर्जनों वाणिज्यिक जहाजों को मिसाइलों, ड्रोन और छोटे नाव हमलों से निशाना बनाया।
3. **नुकसान:** इन हमलों में उन्होंने दो जहाजों को डुबो दिया, एक को जब्त कर लिया और चार क्रू मेंबर्स की हत्या कर दी।

हूती विद्रोही: यमन का गृह युद्ध और उनका उदय-

पृष्ठभूमि:

- यमन में गृह युद्ध की शुरुआत 2014 में हुई, जिसकी जड़ें शिया-सुन्नी विवाद में हैं।
- कार्नेजी मिडिल ईस्ट सेंटर की रिपोर्ट के अनुसार, दोनों समुदायों के बीच विवाद लंबे समय से चल रहा था, जो 2011 में अरब क्रांति के बाद गृह युद्ध में बदल गया।

गृह युद्ध की शुरुआत:

सरकार बनाम विद्रोही:

- 2014 में शिया समुदाय के हूती विद्रोहियों ने सुन्नी सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- सरकार का नेतृत्व राष्ट्रपति **अब्दरब्बू मंसूर हादी** कर रहे थे, जिन्होंने फरवरी 2012 में अरब क्रांति के बाद पूर्व राष्ट्रपति **अली अब्दुल्ला सालेह** से सत्ता छीनी थी।
- हादी देश में स्थिरता लाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन इसी बीच सेना दो हिस्सों में बंट गई और हूती विद्रोही दक्षिण में संगठित हो गए।

ईरान-सऊदी अरब की भूमिका:

- यमन का गृह युद्ध क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष का हिस्सा बन गया।
- शिया बहुल देश **ईरान** ने हूती विद्रोहियों का समर्थन किया।
- सुन्नी बहुल देश **सऊदी अरब** ने राष्ट्रपति हादी की सरकार का समर्थन किया।

हूती विद्रोहियों का विस्तार:

हूती विद्रोही तेजी से संगठित हुए और देश के बड़े हिस्से पर क जा कर लिया।

2015 तक स्थिति इतनी बिगड़ गई कि हूती विद्रोहियों ने सरकार को निर्वासन में जाने पर मजबूर कर दिया।

ईरान का समर्थन और हूती विद्रोहियों की ताकत:

- ईरान से मिल रहे समर्थन के कारण हूती विद्रोही एक प्रशिक्षित और संगठित लड़ाका दल में बदल गए।
- उनके पास आधुनिक हथियार, मिसाइलें और यहां तक कि हेलिकॉप्टर भी उपलब्ध हैं।

लाल सागर के बारे में:

- **स्थिति:** यह **अरब प्रायद्वीप और अफ्रीका** के बीच स्थित एक संकरी समुद्री जलधारा है।
- **उत्तर में:**
  - **मिस्र का सीनाई प्रायद्वीप**, **सुएज़ की खाड़ी** और **अकाबा की खाड़ी**।
  - **सुएज़ नहर** इसे **भूमध्य सागर** से जोड़ती है।
- **दक्षिण में:**
  - **बाब-अल-मंदेब जलडमरूमध्य** इसे **अदन की खाड़ी** से जोड़ता है।
  - यह **यमन** (अरब प्रायद्वीप) को **जिबूती और इरिट्रिया** (हॉर्न ऑफ अफ्रीका) से अलग करता है।
  - इसकी सबसे संकरी चौड़ाई **29 किमी** है।
- **महत्व:** **दुनिया के 10-15% समुद्री व्यापार** का मार्ग रेड सी से होकर गुजरता है।
- **हालिया संकट:**
  - **हूती हमलों** के कारण कई अंतरराष्ट्रीय शिपिंग कंपनियों को **केप ऑफ गुड होप** के रास्ते जाना पड़ रहा है, जिससे तेल, गैस और अन्य वस्तुओं की डिलीवरी में **कई हफ्तों की देरी** हो रही है।

भारत-न्यूज़ीलैंड मुक्त व्यापार समझौता / India-New Zealand Free Trade Agreement

संदर्भ:

भारत और न्यूज़ीलैंड ने **प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** पर फिर से बातचीत शुरू करने की घोषणा की, जिसे **2015 में रोक दिया गया था**। दोनों देशों ने **अप्रैल 2010 में व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (CECA)** पर वार्ता शुरू की थी, लेकिन **9 दौर की चर्चा के बाद** यह वार्ता ठप हो गई थी। अब, व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इसे फिर से शुरू किया जा रहा है।

वार्ता फिर से शुरू करने का उद्देश्य:

1. **बाजार पहुँच और व्यापार वृद्धि को बढ़ावा देना:**
   - उद्देश्य: टैरिफ और व्यापार अवरोधों को कम करके व्यापार के अवसरों का विस्तार करना।
   - उदाहरण: द्विपक्षीय व्यापार अप्रैल-जनवरी 2025 के दौरान 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया, जो आगे की वृद्धि की संभावनाओं को दर्शाता है।
2. **सप्लाई चेन एकीकरण को मजबूत करना:**
   - उद्देश्य: दोनों देशों के बीच लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन की कार्यक्षमता को सुधारना।
3. **निवेश और व्यवसाय के अवसरों को बढ़ावा देना:**
   - उद्देश्य: IT, सेवाओं और कृषि जैसे क्षेत्रों में निवेश को आकर्षित करना और रोजगार के अवसर पैदा करना।

भारत-न्यूज़ीलैंड व्यापार वार्ता 2015 में क्यों रुकी थी?

1. **डेयरी बाजार में पहुँच को लेकर मतभेद:**
   - न्यूज़ीलैंड ने भारत के डेयरी बाजार में अधिक पहुंच की मांग की, लेकिन भारत ने अपने लाखों डेयरी किसानों की सुरक्षा के लिए इसका विरोध किया।
   - उदाहरण: न्यूज़ीलैंड से भारत का डेयरी आयात लगभग $0.57 मिलियन था, और भारत कच्चे डेयरी आयात की अनुमति देने के खिलाफ था।
2. **टैरिफ में कटौती की चुनौती:**
   - न्यूज़ीलैंड का औसत टैरिफ केवल 2.3% था, जबकि भारत का औसत टैरिफ 17.8% था, जिससे टैरिफ में कटौती करना मुश्किल हो गया।
3. **भारत के लिए वस्त्र व्यापार में सीमित लाभ:** न्यूज़ीलैंड के कम टैरिफ और कई उत्पादों पर ड्यूटी-फ्री पहुँच ने भारत के लिए कम लाभदायक स्थिति उत्पन्न की।
4. **कुशल श्रमिकों की आवाजाही पर चिंता:** भारत IT और सेवाओं में कुशल पेशेवरों की आवाजाही में आसानी चाहता था, लेकिन न्यूज़ीलैंड ने इसका विरोध किया।
5. **बाहरी व्यापार दबाव:**
   - भारत पर अमेरिका जैसे देशों का दबाव था कि वह अपने डेयरी और कृषि क्षेत्रों को खोले, जिससे बातचीत में जटिलता आई।

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच टैरिफ असमानता से बातचीत में क्या समस्याएँ उत्पन्न होती हैं?

1. **औसत टैरिफ दरों में बड़ा अंतर:**
   - न्यूज़ीलैंड का औसत आयात टैरिफ: 2.3% (जिसमें से आधे से अधिक टैरिफ लाइनें ड्यूटी-फ्री हैं)।
   - भारत का औसत टैरिफ: 17.8%।
   - भारतीय उत्पाद पहले से ही न्यूज़ीलैंड के बाजार में अच्छी पहुँच रखते हैं, जिससे FTA भारत के लिए कम लाभदायक है।
2. **भारत के लिए सीमित बाजार लाभ:**
   - न्यूज़ीलैंड के कई उत्पादों पर कम या कोई टैरिफ न होने से भारतीय निर्यातकों के लिए नए अवसर सीमित हैं।
   - वस्त्र, फार्मास्युटिकल और ऑटो कंपोनेंट जैसे क्षेत्रों में पहले से ही न्यूनतम प्रतिबंध हैं।
3. **संवेदनशील क्षेत्रों पर टैरिफ में कटौती का दबाव:**
   - न्यूज़ीलैंड अपने डेयरी, मांस और वाइन के निर्यात पर टैरिफ में कटौती चाहता है, लेकिन भारत अपने घरेलू उद्योगों की रक्षा कर रहा है।
4. **पारस्परिक रियायतों में असंतुलन:**
   - यदि भारत अपने टैरिफ में काफी कटौती करता है, तो न्यूज़ीलैंड को अधिक लाभ मिलेगा जबकि भारत की बाजार पहुँच में कोई खास बदलाव नहीं होगा।
5. **अन्य व्यापार साझेदारों के लिए संभावित मिसाल:**
   - यदि भारत न्यूज़ीलैंड के लिए प्रमुख टैरिफ में कटौती करता है, तो भविष्य में अन्य देश भी इसी तरह की रियायतें मांग सकते हैं।
   - ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय संघ और अमेरिका जैसे देश भारत से अपने कृषि और डेयरी क्षेत्रों को खोलने की माँग कर सकते हैं।

वायु प्रदूषण से भारत की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता कम होगी / Air pollution will lower India's solar generation capacity

संदर्भ:

एक अध्ययन के अनुसार, **वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन** के कारण **भारत में सौर पैनलों की दक्षता घटेगी**, जिससे देश के **नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों** पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि **मध्य शताब्दी से पहले भारत की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में 600-800 गीगावॉट-घंटे की कमी** आ सकती है।

भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

मुख्य बिंदु:

1. **प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से सौर ऊर्जा उत्पादन पर प्रभाव:**
   - IIT दिल्ली के शोधकर्ताओं ने पाया कि उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी पावर ग्रिड, जहाँ अधिकतर सौर पार्क स्थित हैं, जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदर्शन में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करेंगे।
   - वायुमंडल में प्रदूषक तत्व सूर्य के प्रकाश को अवशोषित और बिखेर सकते हैं, जिससे पृथ्वी की सतह पर सूर्य की किरणों की तीव्रता कम हो जाती है।

भारत की सौर ऊर्जा क्षमता पर संकट:

1. **सौर ऊर्जा उत्पादन में गिरावट:**
   - भारत में हर साल लगभग 300 साफ-सुथरे आसमान वाले दिन होते हैं, फिर भी आने वाले सौर विकिरण में लगातार गिरावट देखी गई है, जिसे 'डिमिंग' कहा जाता है।
   - जलवायु मॉडल के अनुसार, 2041-2050 तक सौर ऊर्जा उत्पादन की राष्ट्रीय औसत क्षमता में 2 से 4 प्रतिशत तक की गिरावट हो सकती है।
   - यह गिरावट मुख्य रूप से विकिरण में कमी और बढ़ते तापमान के कारण होगी।
2. **सौर कोशिकाओं की दक्षता में कमी:**
   - सौर कोशिकाओं के तापमान में 1.5 से 2 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि का अनुमान है, जिससे दक्षता में कमी आएगी।
   - इसके कारण दक्षता में गिरावट के लगभग 18 अतिरिक्त दिन हो सकते हैं, विशेष रूप से सौर-समृद्ध क्षेत्रों में।

वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य:

1. **मध्यम वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन:**
   - इस परिदृश्य में सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में 600 गीगावाट-घंटे तक की गिरावट हो सकती है।
2. **कमजोर जलवायु कार्रवाई और मजबूत वायु प्रदूषण नियंत्रण:**
   - इस परिदृश्य में सौर ऊर्जा उत्पादन में 840 गीगावाट-घंटे तक की कमी का अनुमान है।

उपाय और सिफारिशें:

1. **प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करना:**
   - सौर ऊर्जा क्षमता को बनाए रखने के लिए प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन दोनों पर एक साथ कार्रवाई की आवश्यकता है।
   - प्रदूषण को कम करके सौर विकिरण की तीव्रता को बनाए रखा जा सकता है।
2. **सौर पैनल की नवीन तकनीक:**
   - भविष्य में सौर कोशिकाओं को अत्याधुनिक तकनीक से विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे उच्च तापमान में भी कुशलता से कार्य कर सकें।
3. **नवीकरणीय ऊर्जा में तेजी से बदलाव:**
   - वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन दोनों को कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा की ओर तेजी से संक्रमण महत्वपूर्ण है।

भारत के सौर ऊर्जा लक्ष्य

1. **वैश्विक सौर ऊर्जा उत्पादन में स्थिति:**
   - भारत विश्व में सौर ऊर्जा का पाँचवाँ सबसे बड़ा उत्पादक है।
2. **साल 2030 तक का लक्ष्य:**
   - भारत का लक्ष्य है कि वह 2030 तक अपनी 50% बिजली गैर-जीवाश्म ईंधनों (Non-fossil Fuel Sources) से उत्पन्न करे।
3. **नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता बढ़ाना:**
   - 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने की योजना है, जिसमें एक-पाँचवां हिस्सा सौर ऊर्जा से प्राप्त किया जाएगा।
4. **सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना:**
   - भारत सोलर पार्कों (Solar Parks) और रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशनों (Rooftop Solar Installations) के विकास को प्रोत्साहित कर रहा है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा / Public Health Education

संदर्भ:

भारत का **सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा क्षेत्र** गंभीर संकट का सामना कर रहा है। इसकी प्रमुख चुनौतियों में **रोजगार की कमी, मानकीकरण का अभाव और वित्तीय संसाधनों की कमी** शामिल हैं, जिससे इस क्षेत्र की प्रगति बाधित हो रही है।

WHO से अमेरिका की वापसी का वैश्विक प्रभाव:

- अमेरिका के **WHO से हटने और US-AID फंडिंग में कटौती** के फैसले से **वैश्विक सहायता और स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित** हुई हैं। हालांकि, भारत की **स्वास्थ्य प्रणाली अंतरराष्ट्रीय सहायता पर केवल 1% निर्भर** होने के कारण, इस फैसले का **सीमित प्रभाव** पड़ा है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा:

1. **परिभाषा:** सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा का उद्देश्य पेशेवरों को रोगों की रोकथाम, स्वास्थ्य प्रबंधन (Healthcare Management), महामारी विज्ञान (Epidemiology), और स्वास्थ्य नीतियों (Health Policies) में प्रशिक्षित करना है।
2. **संवैधानिक प्रावधान:** भारतीय संविधान का अनुच्छेद 47 राज्य को यह निर्देश देता है कि वह सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार को अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी बनाए।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा का विकास:

1. **प्रारंभिक विकास:**
   - भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा की शुरुआत औपनिवेशिक युग में हुई, लेकिन यह लंबे समय तक चिकित्सा प्रशिक्षण (Medical Training) में ही सीमित रही।
   - ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थ (1932) और उसके बाद सामुदायिक चिकित्सा पाठ्यक्रम (Community Medicine Courses) प्रारंभिक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण प्रयास थे।
2. **विकास की गति:**
   - 2005 के बाद, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (National Rural Health Mission - NRHM) के लागू होने के साथ इसमें तेजी आई।
   - MPH (Master of Public Health) कार्यक्रमों की संख्या 2000 में 1 से बढ़कर आज 100 से अधिक हो गई है।
   - हालांकि, सरकारी नियुक्तियों की संख्या सीमित रही, जबकि स्नातकों की संख्या में वृद्धि होती रही, जिससे अधिक आपूर्ति की स्थिति उत्पन्न हो गई।

सार्वजनिक स्वास्थ्य स्नातकों के सामने चुनौतियाँ:

1. **आपूर्ति और मांग में असंतुलन:**
   - प्रवेश स्तर की सार्वजनिक स्वास्थ्य नौकरियों के लिए बहुत अधिक आवेदक होते हैं, जबकि पद सीमित हैं।
   - सरकारी नियुक्तियों में कमी और सार्वजनिक स्वास्थ्य भूमिकाओं में कमी से समस्या और गंभीर हो जाती है।
2. **निजी क्षेत्र का बढ़ता वर्चस्व:**
   - निजी स्वास्थ्य प्रणाली (Private Healthcare System) में सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की बजाय अस्पताल/व्यवसाय प्रबंधन (Hospital/Business Management) पेशेवरों को प्राथमिकता दी जाती है।
   - शोध और विकास के अवसर काफी हद तक विदेशी वित्त पोषण पर निर्भर हैं, जो धीरे-धीरे घट रहा है।
3. **शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर चिंताएँ:**
   - कई MPH कार्यक्रम मानकीकरण की कमी से ग्रस्त हैं और संकाय अक्सर पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं होते।
   - MPH शिक्षा की निगरानी के लिए NMC या UGC जैसी कोई एकल नियामक संस्था (Regulatory Body) नहीं है।
   - संस्थानों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण प्रवेश मानकों में गिरावट आई है।

आगे का रास्ता:

- **नए सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान:** पिछड़े राज्यों में **MPH कॉलेजों की स्थापना** की जाए।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** **प्रशिक्षण क्षमता** बढ़ाने के लिए **सार्वजनिक-निजी साझेदारी** को मजबूत किया जाए।
- **प्रशिक्षण:** सभी **MPH पाठ्यक्रमों में फील्ड वर्क** को अनिवार्य किया जाए।
- **नौकरी के अवसर बढ़ाना:** राज्य स्तर पर **पब्लिक हेल्थ कैडर** बनाकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं।
- **सरकारी स्वास्थ्य प्रणाली में भर्ती:** प्राथमिक, राज्य और राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणालियों में **भर्ती प्रक्रिया तेज की जाए**।

ट्रम्प ने फाइव आईज इंटेलिजेंस अलायंस में व्यवधान डाला / Trump Disruption in Five Eyes Intelligence Alliance

संदर्भ:

ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड, यूके और अमेरिका की **फाइव आईज इंटेलिजेंस गठबंधन** को अभूतपूर्व संकट का सामना करना पड़ रहा है। इसका मुख्य कारण **डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अमेरिकी विदेश नीति में बदलाव** है, जिससे गठबंधन के भीतर समन्वय और सहयोग प्रभावित हो सकता है।

फाइव आईज इंटेलिजेंस एलायंस (Five Eyes Intelligence Alliance - FVEY)

यह दुनिया की सबसे शक्तिशाली और गुप्त खुफिया-साझाकरण (Intelligence Sharing) गठबंधनों में से एक है, जिसमें शामिल हैं:

- संयुक्त राज्य अमेरिका (United States)
- यूनाइटेड किंगडम (United Kingdom)
- कनाडा (Canada)
- ऑस्ट्रेलिया (Australia)
- न्यूजीलैंड (New Zealand)

उत्पत्ति और विकास (Origins and Evolution)

1. **स्थापना:** फाइव आईज की नींव द्वितीय विश्व युद्ध (Second World War) के दौरान रखी गई थी, जब अमेरिका और ब्रिटेन ने 1946 में यूकेयूएसए समझौते (UKUSA Agreement) पर हस्ताक्षर किए।
    - यह समझौता खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान के लिए एक औपचारिक तंत्र (Formal Mechanism) तैयार करने के लिए था।
2. **सदस्य देशों का जुड़ना:**
    - कनाडा (1948), ऑस्ट्रेलिया (1956) और न्यूजीलैंड (1956) बाद में इसमें शामिल हुए।
    - इस प्रकार, यह एक विश्वसनीय एंग्लो-सेक्सन (Anglo-Saxon) देशों का गठबंधन बन गया जो नि:शुल्क खुफिया सहयोग के लिए समर्पित है।
3. **कार्य का विस्तार:**
    - प्रारंभ में, इसका उद्देश्य शीत युद्ध (Cold War) के दौरान सोवियत संचार (Soviet Communications) की निगरानी करना था।
    - समय के साथ, यह आतंकवाद (Terrorism), साइबर युद्ध (Cyber Warfare) और उभरती वैश्विक शक्तियों (Rising Global Powers) से उत्पन्न खतरों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ।

कार्य और खुफिया-साझाकरण तंत्र

1. **भूराजनीतिक निगरानी:** रणनीतिक क्षेत्रों जैसे इंडो-पैसिफिक और मध्य पूर्व पर नजर रखना।
2. **साइबर इंटेलिजेंस:** साइबर खतरों और हैकिंग प्रयासों की पहचान करना।
3. **काउंटर टेररिज्म इंटेलिजेंस:** आतंकवादी नेटवर्क की निगरानी और हमलों को विफल करना।
4. **ह्यूमन इंटेलिजेंस:** जासूसों और गुप्त एजेंटों से जानकारी एकत्र करना।
5. **सिग्नल इंटेलिजेंस:** इलेक्ट्रॉनिक संचार और सैटेलाइट डेटा की निगरानी।
6. **जियोस्पेशल इंटेलिजेंस:** सैटेलाइट इमेजरी और नक्शों का उपयोग करना

ट्रम्प के तहत फाइव आईज के लिए चुनौतियाँ

1. **अमेरिकी विदेश नीति में बदलाव:**
    - ट्रम्प की रूस के साथ संबंध सुधारने की नीति, यूक्रेन में युद्धविराम की कोशिश और NATO व यूरोपीय संघ को कमजोर करने के प्रयास ने पारंपरिक सहयोगियों को अस्थिर कर दिया।
2. **एंग्लोस्पीयर में तनाव:**
    - कनाडा के साथ व्यापार विवाद, जिसमें ट्रम्प के कनाडा को अमेरिका का "51वां राज्य" बनाने के बयान शामिल हैं।
    - ग्रीनलैंड (जो डेनमार्क से जुड़ा है) को "अधिग्रहित" करने का प्रयास, जिससे यूरोप में एंग्लो-अमेरिकन शक्तियों के सबसे करीबी सहयोगी को धक्का लगा।
    - ब्रिटेन के राजनीतिक परिदृश्य को लेकर अमेरिकी अधिकारियों के विवादास्पद बयान, जिसमें सेंसरशिप और राजनीतिक उग्रवाद के आरोप शामिल हैं।
3. **ट्रम्प की नियुक्तियों का प्रभाव:**
    - तुलसी गैबार्ड को राष्ट्रीय खुफिया निदेशक और काश पटेल को एफबीआई निदेशक के रूप में नियुक्त करने के कारण खुफिया-साझाकरण को लेकर चिंताएँ।
    - कनाडा को गठबंधन से बाहर करने की संभावना, हालाँकि व्हाइट हाउस ने इसे नकारा।
4. **भूराजनीतिक प्रभाव और इंडो-पैसिफिक:**
    - **सैन्य संबंधों का विस्तार:** AUKUS के माध्यम से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में फोकस बढ़ा है, जहाँ अमेरिका और ब्रिटेन ऑस्ट्रेलिया की परमाणु-चालित पनडुब्बियों के विकास में मदद कर रहे हैं।
    - **एशियाई भागीदारों के साथ सहयोग:** जापान और अन्य क्षेत्रीय देशों के साथ खुफिया सहयोग में बढ़ोतरी हो रही है।
    - **भविष्य की खुफिया कूटनीति:** मौजूदा अस्थिरता भारत के लिए इस स्थिति का मूल्यांकन करने और अपने खुफिया गठबंधनों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करती है।

समुद्र स्तर में वृद्धि / Sea level rise

संदर्भ:

NASA की रिपोर्ट के अनुसार, **2024 में समुद्र का स्तर अनुमानित 0.43 सेमी प्रति वर्ष की तुलना में 0.59 सेमी प्रति वर्ष की दर से बढ़ा**, जो अपेक्षा से अधिक तेज़ वृद्धि दर्शाता है।

समुद्र स्तर में वृद्धि का अनुमान:

1. **2024 में समुद्र स्तर में वृद्धि:**
   - वैश्विक समुद्र स्तर प्रति वर्ष 0.23 इंच (0.59 सेमी) बढ़ा, जो अपेक्षित 0.17 इंच (0.43 सेमी) से अधिक था।
   - NASA के शोधकर्ताओं के अनुसार, समुद्र के गर्म होने (Ocean Warming) की वजह से यह वृद्धि हुई।
   - आमतौर पर बर्फ की चादरें और ग्लेशियर पिघलने से समुद्र स्तर बढ़ता है। लेकिन 2024 में थर्मल विस्तार (Thermal Expansion - जब पानी गर्म होने पर फैलता है) ने दो-तिहाई वृद्धि का कारण बना, जो सामान्य पैटर्न को उलट देता है।
2. **तापमान में वृद्धि और समुद्र स्तर में वृद्धि:**
   - 2024 अब तक का सबसे गर्म साल साबित हुआ, जिससे समुद्र का पानी फैल गया और समुद्र स्तर को तीन दशकों में सबसे ऊँचे स्तर पर पहुँचा दिया।
   - 1993 में उपग्रह रिकॉर्डिंग शुरू होने के बाद से, वैश्विक समुद्र स्तर में 4 इंच (10 सेमी) की वृद्धि हुई है।
   - वार्षिक वृद्धि की दर तब से दोगुनी हो चुकी है।
3. **समुद्र स्तर की निगरानी:**
   - NASA ने 1992 में TOPEX/Poseidon उपग्रह के साथ समुद्र की ऊँचाई की निगरानी शुरू की।
   - आज, Sentinel-6 Michael Freilich इस मिशन को जारी रखे हुए है और उच्च सटीकता के साथ समुद्र स्तर को ट्रैक कर रहा है।
   - इसका जुड़वां उपग्रह, Sentinel-6B, जल्द ही लॉन्च होगा ताकि डेटा कलेक्शन में कोई रुकावट न आए।
4. **समुद्र में गर्मी का प्रवाह कैसे होता है:**
   - गर्म पानी हल्का होता है और आमतौर पर सतह पर रहता है, जबकि ठंडा पानी भारी होता है और नीचे की ओर रहता है।
   - तेज हवाएँ और समुद्री धाराएँ इस परतबंदी को बिगाड़ सकती हैं और गर्म पानी को नीचे की ओर धकेल सकती हैं।
   - बड़े मौसमीय घटनाएँ जैसे कि El Niño, गर्मी को गहरे समुद्र में स्थानांतरित कर सकते हैं।
5. **भविष्य की चुनौतियाँ:**
   - वैज्ञानिक इन परिवर्तनों पर कड़ी नजर रख रहे हैं ताकि भविष्य में समुद्र स्तर वृद्धि की भविष्यवाणी को बेहतर बनाया जा सके।
   - जैसे-जैसे समुद्र का तापमान बढ़ता जाएगा, इसका प्रभाव तटीय क्षेत्रों पर और भी गंभीर होता जाएगा।

समुद्री स्तर वृद्धि से सबसे अधिक प्रभावित देश:

- **उच्च जोखिम वाले देश: बांग्लादेश, चीन, भारत और नीदरलैंड** समुद्र स्तर वृद्धि के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।
- **प्रशांत द्वीपीय राष्ट्र: किरिबाती, तुवालु और मार्शल आइलैंड्स** तूफानों और समुद्री जल स्तर संवेदनशीलता के कारण गंभीर खतरे का सामना कर रहे हैं।

समुद्री स्तर वृद्धि से निपटने के उपाय:

- **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी:** जलवायु परिवर्तन और समुद्री स्तर वृद्धि को धीमा करने के लिए **कार्बन उत्सर्जन कम करना** आवश्यक है।
- **शमन और अनुकूलन:**
  - **समुद्री दीवारें और तूफान सुरक्षा अवरोध** जैसी संरचनाओं का निर्माण किया जाए।
  - **बेहतर जल निकासी प्रणाली और बाढ़ प्रतिरोधी इमारतों** का विकास किया जाए।
  - **मैंग्रोव, वेटलैंड और कोरल रीफ** जैसी प्राकृतिक बाधाओं को पुनर्स्थापित किया जाए।
- **आपदा जोखिम न्यूनीकरण:**
  - **संयुक्त राष्ट्र द्वारा समर्थित आपदा जोखिम न्यूनीकरण योजनाएं** मजबूत की जाएं।
  - संवेदनशील क्षेत्रों में **समुद्र स्तर वृद्धि से बचाव के लिए समुदायों का पुनर्वास** किया जाए।

बोडो शांति समझौता / Bodo Peace Accord

संदर्भ:

केंद्रीय गृह मंत्री ने असम के कोकराझार में **अखिल बोडो छात्र संघ (ABSU) के 57वें वार्षिक सम्मेलन** को संबोधित किया। उन्होंने **बोडो शांति समझौते की सफलता** को रेखांकित करते हुए इसे **क्षेत्र में स्थायी शांति और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम** बताया।

बोडो आंदोलन का पृष्ठभूमि:

- बोडो असम की सबसे बड़ी जनजातीय समुदायों में से एक हैं, जिनकी समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विरासत है।

1. हालाँकि, असम की राजनीतिक और प्रशासनिक प्रणाली में वे लंबे समय से उपेक्षित महसूस करते आए हैं।

- इस उपेक्षा के कारण 1980 के दशक में एक अलग बोडोलैंड की मांग उठी, जिसने एनडीएफबी (NDFB) और बोडो लिबरेशन टाइगर्स (BLT) जैसे समूहों के नेतृत्व में आंदोलन, हिंसा और उग्रवाद को जन्म दिया।

समस्या के समाधान के पहले प्रयास:

1. **बोडो समझौता (1993):** इसके तहत बोडोलैंड स्वायत्त परिषद (BAC) का गठन हुआ।
2. **समझौता (2003):** संविधान की छठी अनुसूची के तहत बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (BTC) का गठन किया गया।

बोडो शांति समझौता (2020)

- यह समझौता असम के बोडो-बहुल क्षेत्रों, विशेष रूप से बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR) में शांति और स्थिरता लाने के उद्देश्य से किया गया था।
- यह समझौता भारत सरकार, असम सरकार और बोडो संगठनों, जिसमें नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (NDFB) शामिल था, के बीच हुआ।

मुख्य विशेषताएं:

1. **नाम परिवर्तन और अधिक स्वायत्तता:** बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (BTC) का नाम बदलकर बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR) कर दिया गया और इसे अधिक स्वायत्तता प्रदान की गई।
2. **गैर-बोडो गांवों का बहिष्कार:** मौजूदा BTC के भीतर के गैर-बोडो गांवों को बाहर कर दिया गया।
3. **अधिकारों का विस्तार:** BTC के अधिकारों को संविधान की छठी अनुसूची के तहत बढ़ाया गया।
4. **भाषाई मान्यता:** बोडो भाषा को असम की एक सहायक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई।

चंद्रयान-5 मिशन / Chandrayaan-5

संदर्भ:

ISRO ने **चंद्रयान-5 मिशन** को मंजूरी दी है, जिसे **जापान के साथ मिलकर संचालित किया जाएगा**। साथ ही, **चंद्रयान-4 मिशन** की तैयारी भी जारी है, जिसका उद्देश्य **चंद्रमा की मिट्टी को पृथ्वी पर लाना** है। भविष्य की योजनाओं में **गगनयान मिशन और भारत का स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन, "भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन"** शामिल हैं।

चंद्रयान-5 मिशन को मिली मंजूरी:

- **मंजूरी:** चंद्रयान-5 मिशन को केंद्र से मंजूरी मिल गई है, जिसकी घोषणा ISRO के अध्यक्ष वी नारायणन ने 16 मार्च, 2025 को की।
- **घोषणा का अवसर:** नारायणन ने यह घोषणा बेंगलुरु स्थित भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के नए अध्यक्ष के रूप में अपने नियुक्ति समारोह के दौरान की।
- **मिशन का विवरण:**
  - चंद्रयान-5 के तहत चंद्रमा की सतह की खोज के लिए **250 किलोग्राम वज़न वाला रोवर** भेजा जाएगा।
  - यह चंद्रयान-3 मिशन में इस्तेमाल किए गए **25 किलोग्राम वज़न वाले रोवर "प्रयागयान"** की तुलना में काफी बड़ा है।

चंद्रयान मिशन:

1. **चंद्रयान-1 (2008):** चंद्रमा के रासायनिक, खनिजीय और फोटो-भौगोलिक मानचित्र बनाए।
2. **चंद्रयान-2 (2019):** इसका लैंडर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन ऑर्बिटर ने चंद्रमा की सतह की सैकड़ों तस्वीरें भेजीं।
3. **चंद्रयान-3 (2023):**
   - यह चंद्रयान-2 का फॉलो-ऑन मिशन था, जिसका उद्देश्य सुरक्षित लैंडिंग और चंद्रमा की सतह पर रोवर को चलाने की क्षमता का प्रदर्शन करना था।
   - 23 अगस्त, 2023 को विक्रम लैंडर ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में सफलतापूर्वक सॉफ्ट-लैंडिंग की।
4. **चंद्रयान-4 मिशन (2027 - अपेक्षित):** यह मिशन चंद्रमा की मिट्टी के नमूने इकट्ठा कर उन्हें पृथ्वी पर लाने के उद्देश्य से होगा।
5. **चंद्रयान-5 (जापान के साथ सहयोग):** यह मिशन जापान के सहयोग से किया जाएगा।
   - चंद्रयान-3 मिशन के 25 किलोग्राम रोवर की तुलना में, चंद्रयान-5 मिशन में चंद्रमा की सतह का अध्ययन करने के लिए **250 किलोग्राम का रोवर** भेजा जाएगा।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

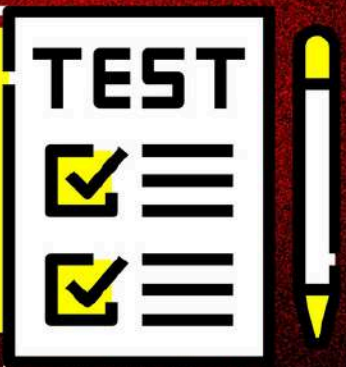

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !